International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5(2), May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अवधी लोक संगीत और 'अवध कै अँजोरिया'

-डॉ.ज्योति विश्वकर्मा
असिस्टेंट प्रोफेसर (संगीत विभाग)
जगद्गुरु रामभद्राचार्य विकलांग विश्वविद्यालय चित्रकूट, उत्तर प्रदेश

वेद की ऋचाओं की भांति लोक संगीत भी अत्यंत प्राचीन एवं मानवीय संवेदनाओं का सहज उद्गार है । यह लेखनी द्वारा नहीं बल्कि लोक-जिह्वा का सहारा पाकर जन-मानस से निःसृत होकर आज तक जीवित है । जिसे कोई एक व्यक्ति नहीं बल्कि पूरा लोक समाज अपनाता है। सामान्यतः लोक में प्रचलित, लोक द्वारा रचित एवं लोक के लिए गया जाने वाले संगीत को लोक संगीत कहा जा सकता है। लोक संगीतकार अपने व्यक्तित्व को लोक समर्पित कर देता है। शास्त्रीय नियमों की विशेष परवाह न करके सामान्य लोकव्यवहार के उपयोग में लाने के लिए मानव अपने आनन्द की तरंग में जो छन्दोबद्ध वाणी सहज उद्भूत करता है वही लोक संगीत है। इस प्रकार लोक संगीत शब्द का अर्थ है- लोक में प्रचलित संगीत, लोक-रचित संगीत, लोक-विषयक संगीत । लोक संगीत में जिन गीतों का गायन किया जाता है उन्हें लोकगीत कहा जाता है । कजरी, सोहर, चैती, लंगुरिया आदि लोकगीतों की प्रसिद्ध शैलियाँ हैं ।

लोकगीतों के विषय में विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने विचार व्यक्त किए हैं, जिनमें से कुछ विचार द्दष्टव्य हैं- राष्ट्रपिता महात्मा गांधी ने कहा था कि, "लोकगीतों में धरती गाती है, पर्वत गाते हैं, नदियां गाती हैं, फसलें गाती हैं। उत्सव, मेले और अन्य अवसरों पर मधुर कंठों में लोक समूह लोकगीत गाते हैं ।"

स्व० रामनरेश त्रिपाठी के शब्दों में "जैसे कोई नदी किसी घोर अंधकारमयी गुफा में से बहकर आती हो और किसी को उसके उद्गम का पता न हो, ठीक यही दशा लोकगीतों के बारे में विद्वान मनीषियों ने स्वीकारी है ।"

आचार्य रामचंद्र शुक्ल इस प्रभाव को स्वीकृति देते हुए कहा, "जब-जब शिष्टों का काव्य पंडितों द्वारा बंधकर निश्चेष्ट और संकुचित होगा तब-तब उसे सजीव और चेतन प्रसार देश के सामान्य जनता के बीच स्वच्छंद बहती हुई प्राकृतिक भाव धारा से जीवन तत्व ग्रहण करने से ही प्राप्त होगा ।"

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5(2), May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

सामाजिकता को जिंदा रखने के लिए लोकगीतों और लोकसंस्कृतियों का संरक्षण किया जाना बहुत जरूरी है । कहा जाता है कि जिस समाज में लोकगीत नहीं होते, वहां पागलों की संख्या अधिक होती है । सदियों से दबे-कुचले समाज ने, खास कर महिलाओं ने सामाजिक दंश, अपमान, घर-परिवार के तानों, जीवन संघषों से जुड़ी आपा-धापी को अभिव्यक्ति करने के लिए लोकगीतों का सहारा लिया। लोकगीत किसी काल विशेष या कवि विशेष की रचनाएं नहीं हैं । अधिकांश लोकगीतों के रचकारों के नाम अज्ञात हैं । दरअसल एक ही गीत तमाम कंठों से गुजर कर पूर्ण हुआ है । महिलाओं ने लोकगीतों को ज़िन्दा रखने में महत्वपूर्ण योगदान प्रदान किया है । आज वैश्वीकरण की आँधी में हमने अपनी कलाओं को तहस-नहस कर दिया है । अपनी संस्कृतियां अनुपयोगी या बेकार लगने लगी हैं ।

अवध प्रांत में प्रत्येक खुशी के अवसर पर लोकगीत गाने का प्रचलन है । पुत्र-जन्म के अवसर पर गाये जाने वाले गीतों को सोहर कहा जाता है । पुत्र जन्मोत्सव के मंगल अवसर पर स्त्रियाँ सोहर गीत गाते समय गर्भ से लेकर बच्चे के जन्म तक की सभी स्थितियों का चित्रण करती हैं । बन्ध्या एवं पुत्रहीन स्त्रियों की मनोव्यथा का चित्रण सोहर गीतों में मिलता है-

(क) सासु मोरि कहै बझिनियाँ ननद ब्रजवासिनी
जेकर बारी बियहिया वै घरा से निकारै।

(ख)सास ससुर निसदिन बोलिया बोलय ननद ताना मारइ हो।
रामा कौने करमवाँ से चूकेन बलकवा न पायेव हो।।

आज प्रचलित मेट्रोकल्चर में लोकगीत और लोक धुनें प्रायः लुप्त होती जा रही हैं । आज युवा पॉप म्यूजिक और रैप सॉन्ग के सामने लोकगीतों को भूलते जा रहे हैं । ऐसे में लोक धुनों को संरक्षित और संवर्धित करने का महत्वपूर्ण कार्य जगद्गुरु रामभद्राचार्य जी द्वारा किया गया जिसका महत्वपूर्ण दस्तावेज "अवध कै अँ॑जोरिया" है । यह ग्रंथ अपनी मातृभाषा के प्रति अगाध लगाव का प्रतीक है, क्योंकि मात्र पंद्रह दिन में इतना उत्कृष्ट और सरस ग्रंथ सृजित हो सका यह सामान्य बात नहीं है । इसका प्रत्येक गीत अवध की संस्कृति, सभ्यता, संगीत, भावना और अपने आराध्य के प्रति अगाध निष्ठा प्रदर्शित कर रहा है । जिस समय

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5(2), May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

अवधी भाषा में उदासीनता की काली घनी रात अपना डेरा जमाए हुई थी, ऐसे में इस ग्रंथ ने अँजोरिया अर्थात चाँदनी का कार्य किया । जिसके उजाले में अवध की समृद्धि संस्कृति के दर्शन होते हैं।

गुरुदेव भगवान ने अपने आराध्य राघव सरकार को अवध के चंद्रमा और उनकी शक्ति (अँजोरिया) के रूप में माँ सीता को चित्रित किया है-

"राम अवध चंद सीता अवध कै अँजोरिया,
एन कर सुजस चहुँ ओर बा,
चौदह भुवनन में इनसे अजोर बा।
सीताराम, भगवान परब्रह्म पूरन
सदा करैं भगतन के भव-भय चूरन
परस्पर अभिन्न जैसे जल और लहरिया
जुगल में सनेह नहिं थोर बा।"

भगवान रामचंद्र ऐसे चंद्रमा हैं जिनसे 14 लोकों में धर्म, नीति और मर्यादा का उजाला फैला हुआ है। उनके साथ माता सीता की युगल जोड़ी सुशोभित है दोनों मिलकर अपने भक्तों के भय का विनाश करते हैं । दोनों में उसी प्रकार की अभिन्नता है जिस प्रकार जल और लहर एक दूसरे से अभिन्न है ।

गुरुजी ने प्रभु श्रीराम जी के अनन्य भक्त पवन पुत्र हनुमान जी के जन्म की पौराणिकता को इस गीत में कितने सुंदर ढंग से उल्लेखित किया है-

"हनुमत जनम पे बधैया करोर हो
तू जुग-जुग जिय भैया केसरी-किसोर हो।
तजि के कैलास गिरि रुद्र देव देहिया
बानर सरीर धरई राम के सनेहिया
चारिउँ जुग जगमगाइ सुजस चहुँ ओर हो।"

अवध क्षेत्र में बालक जन्म पर बधाई गीत गाने का प्रचलन है और प्रसन्नता के इस क्षण में दान करने का चलन है । रामावतरण के समय कौशिल्या जी राजा दसरथ जी से ऐसा ही कुछ अनुरोध कर रही हैं, इस गीतांश में देखिए-

International Journal of Research in Social Sciences
Vol. 9, Issue 5(2), May - 2019,
ISSN: 2249-2496 Impact Factor: 7.081
Journal Homepage: http://www.ijmra.us, Email: editorijmie@gmail.com
Double-Blind Peer Reviewed Refereed Open Access International Journal - Included in the International Serial Directories Indexed & Listed at: Ulrich's Periodicals Directory ©, U.S.A., Open J-Gate as well as in Cabell's Directories of Publishing Opportunities, U.S.A

"मचियै बैठि कौशल्या रानी, पिया से अरज करईं हो।
हो राजा हमरे जो होई है होरिलवा, तो अन-धन लुटइबे हो।।
चैत ही की शुक्ल नवमी, सकल दिन मंगल हो।
लालन टारन भुवन के भार, कौशल्या गृह प्रकटइ हो ।।"

बालक जन्मोत्सव में बारहवां दिन महत्वपूर्ण होता है जब बंधु-बांधव के संग मिलकर एक संस्कार संपन्न किया जाता है जिसे 'बरही' कहा जाता है । माँ कौशल्या शिशु राघव की बरही किस प्रकार करती हैं, गुरु जी ने इस गीत में अत्यंत मनमोहक ढंग से उल्लिखित किया है-

"नगर के कनिया कुमारी किरी आजु आवहिं हो ।
बहिनी आज मोरे राम के बरहिया तिनहुँ घर सोहर हो ।।
पहिरेहँ लहँगा चुनरिया मुदित मंगल साजहु हो ।
बहिनी धर लेहु सीस पे कलसवा हरिदि दूबी हरियर हो ।".....

अवधी भाषा में जो मिठास है वह इन गीतों में रसास्वादन करने को प्राप्त हो रही है । ग्रंथकार की अपनी भाषा, संस्कृति, लोकरीतियों के प्रति जो अथाह प्रेम तथा ज्ञान है वह इस ग्रंथ की पहचान और शान है जो इसको समकालीन साहित्यिक परिधि सम्मिलित करने के लिए पर्याप्त है ।

संदर्भ--

1.श्री रामनरेश त्रिपाठी, कविता-कौमुदी (तीसरा भाग - ग्रामगीत) संस्करण 1990, पृष्ठ-136
2. मीमांसा जून 2011, संपादकः डाॅ० मनीराम वर्मा पृष्ठ-8
3. जगद्गुरु रामभद्राचार्य जी, अवध कै अँजोरिया, संस्करण 2019,पृष्ठ-13
4.वही, पृष्ठ-15
5.वही, पृष्ठ-17
6.वही, पृष्ठ-19-20